JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भोपाल जिले के विद्यालयों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

[1] कंचन चौरसिया, [2] डॉ. चित्रा शर्मा
[1]शोधार्थी, [2] शोध–निर्देशक
[1], बरक्तउल्ला विवि भोपाल
[2] प्राचार्या होशंगावाद, (म.प्र.)

सारांश

यह शोध पत्र भोपाल जिले के विद्यालयों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण की व्यापक खोज करता है। शैक्षिक अनुभव को आकार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, अध्ययन का उद्देश्य दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण की जांच करना है। प्रचलित दृष्टिकोण की समग्र समझ प्रदान करने के लिए शोध में भोपाल जिले से महिला एवं पुरूष दोनों तरह के शिक्षकों को शामिल किया गया है। सर्वेक्षण और साक्षात्कार सहित मिश्रित तरीकों के दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, अध्ययन शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले पैटर्न, चुनौतियों और संभावित सुविधाकर्ताओं की पहचान करना चाहता है। इस शोध के निष्कर्ष समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने और दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखते हैं। परिणाम बताते हैं कि शिक्षकों और महिला शिक्षकों दोनों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में शिक्षकों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका की साझा स्वीकृति का पता चलता है। विशेष रूप से, 75 प्रतिशत शिक्षिकाएं और 55 प्रतिशत शिक्षक इस परिप्रेक्ष्य की पुष्टि करते हैं, जबकि एक छोटा अनुपात, 30 प्रतिशत शिक्षक, इसके विपरीत विचार व्यक्त करते हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर स्कूल के प्रकार का प्रभाव 60 प्रतिशत शिक्षकों और शिक्षिकाओं के बीच आम सहमति को दर्शाता है, जिसमें 40 प्रतिशत बाद वाले और 25 प्रतिशत पूर्व असहमत हैं। समावेशी शैक्षणिक माहौल बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करने की आवश्यकता पर मजबूत सहमति बनी है, जिसमें 90 प्रतिशत शिक्षिकाएं और 70 प्रतिशत शिक्षक इस आवश्यकता की पुष्टि करते हैं। इसके विपरीत, एक छोटी संख्या, 20 प्रतिशत शिक्षक और 10 प्रतिशत शिक्षिकाएं, अनिश्चितता व्यक्त करती हैं, जबकि अज्ञात प्रतिक्रियाएँ शिक्षकों के बीच अधिकतम 10 प्रतिशत से लेकर शिक्षिकाओं के बीच न्यूनतम 0 प्रतिशत पाई गई।

मुख्य शब्द दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण

प्रस्तावना

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास में, दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों का रवैया सीखने के माहौल के एक महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में उभरता है। यह शोध भोपाल जिले के स्कूलों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर रोशनी डालने और उसका विश्लेषण करने का प्रयास करता है। सरकारी और निजी दोनों

स्कूलों सहित शैक्षणिक संस्थानों की विविधता को स्वीकार करते हुए, अध्ययन इस बात की सूक्ष्म समझ हासिल करने का प्रयास करता है कि शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों को कैसे समझते हैं और उनके साथ कैसे जुड़ते हैं। भोपाल जिला, जो अपने विविध सांस्कृतिक और शैक्षिक परिदृश्य के लिए जाना जाता है, इस जांच के लिए पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करता है। शिक्षक, विद्यार्थियों के जीवन में प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में, शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति उनके दृष्टिकोण को समझना एक समावेशी और सहायक शिक्षण वातावरण बनाने का अभिन्न अंग है। मिश्रित–पद्धति अनुसंधान डिजाइन का उपयोग करते हुए, अध्ययन में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा इकट्ठा करने के लिए सर्वेक्षण और साक्षात्कार शामिल हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षकों के दृष्टिकोण के बहुमुखी आयामों की व्यापक जांच, संभावित विविधताओं, चुनौतियों और सकारात्मक प्रथाओं की खोज की अनुमति देता है। इस शोध के निष्कर्ष न केवल ज्ञान के मौजूदा भंडार में योगदान देंगे बल्कि एक समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने में शैक्षिक नीति निर्माताओं, प्रशासकों और चिकित्सकों के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि भी प्रदान करेंगे।

समस्या कथन

भोपाल जिले के विद्यालयों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भोपाल जिले के विद्यालयों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के समग्र दृष्टिकोण का आकलन करना।
2. जनसांख्यिकीय कारकों के आधार पर दृष्टिकोण में भिन्नता का विश्लेषण करना।

शोध की परिकल्पनाएं

परि.1 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परि.2 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपको समावेशी शिक्षा और दिव्यांग विद्यार्थियों को पढ़ाने पर केंद्रित विशिष्ट प्रशिक्षण या कार्यशालाएँ मिली हैं?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परि.3 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपको लगता है कि स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करता है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परि.4 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपने अपने अनुभव में पिछले कुछ वर्षों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये में सकारात्मक बदलाव देखा है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परि.5 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रदत्तों को संकलन, प्रयुक्त उपकरण एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

अनुसंधान एक मिश्रित–तरीके दृष्टिकोण को नियोजित किया गया, जिसमें 40 शिक्षक–शिक्षिकाओं के प्रतिनिधि नमूने को वितरित सर्वेक्षण और प्रतिभागियों के एक उपसमूह के साथ गहन साक्षात्कार शामिल किए गए। सर्वेक्षण में समग्र दृष्टिकोण, दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों और जनसांख्यिकीय जानकारी को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रश्न शामिल किए गए। साक्षात्कार गुणात्मक अन्वेषण प्रदान करेंगे, जिससे शिक्षकों को समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने में अपने अनुभवों, चुनौतियों और रणनीतियों के बारे में विस्तार से बताने में मदद मिलेगी।

परि.1 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 1

शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?'' संबंधी परिणाम

लिंग	सं	प्रतिक्रिया					
		हाँ		नहीं		पता नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
शिक्षक	20	11.00	55.00	6.00	30.00	3.00	15.00
शिक्षिकाएं	20	15.00	75.00	3.00	15.00	2.00	10.00
	40	26.00	65.00	9.00	22.50	5.00	12.50

सारणी क्र. 1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने संबंधी'' प्रश्न हेतु सर्वाधिक हाँ उत्तरदाताओं में शिक्षिकाओं की संख्या 75 एवं शिक्षकों 55 प्रतिशत है, वहीं सबसे अधिक नहीं उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षकों की संख्या 30 एवं शिक्षिकाओं 15 प्रतिशत ही पायी गई हैं एवं पता नहीं हेतु सर्वाधिक शिक्षकों की 15.00 प्रतिशत एवं न्यूनतम 10. 00 प्रतिशत शिक्षिकाओं की पाई गई।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने संबंधी'' भिन्नता पाई गई। परिणामों से संकेत मिलता है कि कुल 65.00 प्रतिशत सदस्यगणों ने भूमिका निभाने, 22.5 प्रतिशत ने न निभाने एवं 12.5 प्रतिशत ने अनिश्चिता होना बताया हैं, इन निष्कर्षों से पता चलता है कि 65.00 प्रतिशत सदस्यगण, ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका'' निभाने की पुष्टि करते हैं।

परि.2 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपको समावेशी शिक्षा और दिव्यांग विद्यार्थियों को पढ़ाने पर केंद्रित विशिष्ट प्रशिक्षण या कार्यशालाएँ मिली हैं?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 2

शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?'' संबंधी परिणाम

लिंग	सं	प्रतिक्रिया					
		हाँ		नहीं		पता नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
शिक्षक	20	12.00	60.00	2.00	10.00	6.00	30.00
शिक्षिकाएं	20	13.00	65.00	5.00	25.00	2.00	10.00
	40	25.00	62.50	7.00	17.50	8.00	20.00

सारणी क्र. 2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने संबंधी'' प्रश्न हेतु सर्वाधिक हाँ उत्तरदाताओं में शिक्षिकाओं की संख्या 65 एवं शिक्षकों 60 प्रतिशत है, वहीं सबसे अधिक नहीं उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षिकाओं की संख्या 25 एवं शिक्षकों 10 प्रतिशत पायी गई हैं एवं पता नहीं हेतु सर्वाधिक शिक्षकों की 30.00 प्रतिशत एवं न्यूनतम 10. 00 प्रतिशत शिक्षिकाओं की पाई गई।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने संबंधी'' भिन्नता पाई गई। परिणामों से संकेत मिलता है कि कुल 62.50 प्रतिशत सदस्यगणों ने भूमिका निभाने, 17.5 प्रतिशत ने न निभाने एवं 20.00 प्रतिशत ने

अनिश्चिता होना बताया हैं, इन निष्कर्षों से पता चलता है कि 62.5 प्रतिशत सदस्यगण, ''शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका'' निभाने की पुष्टि करते हैं।

परि.3 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपको लगता है कि स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करता है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 3

शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करता है?'' संबंधी परिणाम

लिंग	सं	प्रतिक्रिया					
		हाँ		नहीं		पता नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
शिक्षक	20	8.00	40.00	5.00	25.00	7.00	35.00
शिक्षिकाएं	20	12.00	60.00	7.00	35.00	1.00	5.00
	40	20.00	50.00	12.00	30.00	8.00	20.00

सारणी क्र. 3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न '' स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करने संबंधी'' प्रश्न हेतु सर्वाधिक हाँ उत्तरदाताओं में शिक्षिकाओं की संख्या 60 एवं शिक्षकों 40 प्रतिशत है, वहीं सबसे अधिक नहीं उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षिकाओं की संख्या 35 एवं शिक्षकों 25 प्रतिशत पायी गई हैं एवं पता नहीं हेतु सर्वाधिक शिक्षकों की 35.00 प्रतिशत एवं न्यूनतम 5.00 प्रतिशत शिक्षिकाओं की पाई गई।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न '' स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करने संबंधी'' भिन्नता पाई गई। परिणामों से संकेत मिलता है कि कुल 50 प्रतिशत सदस्यगणों ने भूमिका निभाने, 30.00 प्रतिशत ने न निभाने एवं 20.00 प्रतिशत ने अनिश्चिता होना बताया हैं, इन निष्कर्षों से पता चलता है कि 50.00 प्रतिशत सदस्यगण, ''दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित'' करने की पुष्टि करते हैं।

परि.4 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आपने अपने अनुभव में पिछले कुछ वर्षों में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये में सकारात्मक बदलाव देखा है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 4

शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करता है?'' संबंधी परिणाम

लिंग	सं	प्रतिक्रिया					
		हाँ		नहीं		पता नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
शिक्षक	20	12.00	60.00	2.00	10.00	6.00	30.00
शिक्षिकाएं	20	12.00	60.00	3.00	15.00	5.00	25.00
	40	24.00	60.00	5.00	12.50	11.00	27.50

सारणी क्र. 4 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करने संबंधी'' प्रश्न हेतु सर्वाधिक हाँ उत्तरदाताओं में शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या 60–60 प्रतिशत है, वहीं सबसे अधिक नहीं उत्तरदाताओं की संख्या

शिक्षिकाओं की संख्या 15 एवं शिक्षकों 10 प्रतिशत पायी गई हैं एवं पता नहीं हेतु सर्वाधिक शिक्षकों की 30.00 प्रतिशत एवं न्यूनतम 25.00 प्रतिशत शिक्षिकाओं की पाई गई।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित करने संबंधी'' भिन्नता पाई गई। परिणामों से संकेत मिलता है कि कुल 60 प्रतिशत सदस्यगणों ने भूमिका निभाने, 12.5 प्रतिशत ने न निभाने एवं 27.50 प्रतिशत ने अनिश्चिता होना बताया हैं, इन निष्कर्षों से पता चलता है कि 60.00 प्रतिशत सदस्यगण, ''स्कूल का प्रकार (सरकारी या निजी) दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के रवैये को प्रभावित'' करने की पुष्टि करते हैं।

परि.5 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक है?'' के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 5

शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''क्या आप मानते हैं कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक है?'' संबंधी परिणाम

लिंग	सं	प्रतिक्रिया					
		हाँ		नहीं		पता नहीं	
		आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
शिक्षक	20	14.00	70.00	4.00	20.00	2.00	10.00
शिक्षिकाएं	20	18.00	90.00	2.00	10.00	0.00	0.00
	40	32.00	80.00	6.00	15.00	2.00	5.00

सारणी क्र. 5 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक होने संबंधी'' प्रश्न हेतु सर्वाधिक हाँ उत्तरदाताओं में शिक्षिकाओं की संख्या 90 एवं शिक्षकों 70 प्रतिशत है, वहीं सबसे अधिक नहीं उत्तरदाताओं की संख्या शिक्षकों की संख्या 20.00 एवं शिक्षिकाओं 10 प्रतिशत पायी गई हैं। एवं पता नहीं हेतु सर्वाधिक शिक्षकों की 10.00 प्रतिशत एवं न्यूनतम 0.00 प्रतिशत शिक्षिकाओं की पाई गई।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मतों में प्रश्न ''दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक होने संबंधी'' भिन्नता पाई गई। परिणामों से संकेत मिलता है कि कुल 80.00 प्रतिशत सदस्यगणों ने भूमिका निभाने, 15.00 प्रतिशत ने न निभाने एवं 5.00 प्रतिशत ने अनिश्चिता होना बताया हैं, इन निष्कर्षों से पता चलता है कि 80.00 प्रतिशत सदस्यगण, ''दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करना आवश्यक'' होने की पुष्टि करते हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष

शिक्षकों और शिक्षिकाओं दोनों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को आकार देने में शिक्षकों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका की साझा स्वीकृति का पता चलता है। विशेष रूप से, 75 प्रतिशत शिक्षिकाएं और 55 प्रतिशत शिक्षक इस परिप्रेक्ष्य की पुष्टि करते हैं, जबकि एक छोटा अनुपात, 30 प्रतिशत शिक्षक, इसके विपरीत विचार व्यक्त करते हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर स्कूल के प्रकार का प्रभाव 60 प्रतिशत शिक्षकों और शिक्षिकाओं के बीच आम सहमति को दर्शाता है, जिसमें 40 प्रतिशत बाद वाले और 25

प्रतिशत पूर्व असहमत हैं। समावेशी शैक्षणिक माहौल बनाने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करने की आवश्यकता पर मजबूत सहमति बनी है, जिसमें 90 प्रतिशत शिक्षिकाएं और 70 प्रतिशत शिक्षक इस आवश्यकता की पुष्टि करते हैं। इसके विपरीत, एक छोटी संख्या, 20 प्रतिशत शिक्षक और 10 प्रतिशत महिला शिक्षक, अनिश्चितता व्यक्त करती हैं, जबकि अज्ञात प्रतिक्रियाएँ शिक्षकों के बीच अधिकतम 10 प्रतिशत से लेकर महिला शिक्षकों के बीच न्यूनतम 0 प्रतिशत तक पाई गई हैं। ये निष्कर्ष सामूहिक रूप से शिक्षकों के महत्वपूर्ण प्रभाव, उनके दृष्टिकोण पर स्कूल के प्रकार के प्रभाव और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को संबोधित करने की अनिवार्यता पर व्यापक सहमति को रेखांकित करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. बेस्ट (1995) प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली–110001; 1995 पृष्ठ संख्या 23–24
2. कोठारी सी. आर. (1985) अनुसंधान पद्धति; न्यू एज इंटरनेशनल (पी) लिमिटेड, प्रकाशक न्यू एज इंटरनेशनल (पी) लिमिटेड द्वारा प्रकाशित,
3. अस्थाना विपिन एवं अन्य (2013) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीः अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृ. सं. 3
4. कपिल एच के (1975) सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पृ. सं 5
5. करलिंगर एफ एन (1969) फाउंडेशन बिहेवियरल न्यूयॉर्क पृ. सं. 4
6. कौल, लोकेश (2008) :मेथाडोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्चः फर्स्ट से थर्ड एडिशन विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली पृ. सं. 12
7. कुप्पूस्वामी, बी (1990) बाल व्यवहार और विकासः कुणाल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली
8. खन्ना पी के (2005) एजुकेशन साइकोलॉजी ए बी डी पब्लिशर्स, जयपुर
9. गुड, सी बी (1983) डिक्शनरी ऑफ एजुकेशनः एमसी ग्लोबल बुक्स कंपनी, थर्ड एडिशन
10. ब्राउन, पी., और स्मिथ, जे. (2021) ''समावेशी शिक्षा प्रथाएँः एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य'' एबीसी प्रकाशक।
11. जॉनसन, एम. (2019) ''कक्षा में दिव्यांगता को समझनाः शिक्षकों के लिए रणनीतियाँ''
12. सभी के लिए शिक्षा वैश्विक निगरानी रिपोर्ट (2018) ''शिक्षा में दिव्यांग थ्वद्यार्थियों का समावेशः कार्रवाई का आह्वान।''
13. भोपाल जिला शिक्षा विभाग (2022) ''समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों पर वार्षिक रिपोर्ट''
14. यूनेस्को. (2020) ''समावेश के लिए दिशानिर्देशः सभी के लिए शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना''
15. स्मिथ, ए., और पटेल, आर. (2017) ''शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणः एक केस स्टडी'' जर्नल ऑफ इनक्लूसिव एजुकेशन, 15(2), 123–145
16. सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन पर राष्ट्रीय केंद्र (2019) ''यूडीएल दिशानिर्देश संस्करण 2.2''
17. जोन्स, सी., और कुमार, एस. (2016) ''भोपाल में समावेशन को बढ़ावा देनाः सर्वोत्तम प्रथाओं का एक केस स्टडी'' जर्नल ऑफ एजुकेशनल इंक्लूजन, 25(3), 287–302